षष्ठः पाठः

केन किं वर्धते?

(किससे क्या बढ़ता है?)

सुवचनेन मैत्री,	इन्दुदर्शनेन समुद्रः।
शृङ्गारेण रागः,	विनयेन गुणः।
दानेन कीर्तिः,	उद्यमेन श्रीः।
सत्येन धर्मः,	पालनेन उद्यानम्।
सदाचारेण विश्वासः,	अभ्यासेन विद्या।
न्यायेन राज्यम्,	औचित्येन महत्त्वम्।
औदार्येण प्रभुत्वम्,	क्षमया तपः।
पूर्ववायुना जलदः,	लाभेन लोभः।
पुत्रदर्शनेन हर्षः,	मित्रदर्शनेन आह्लादः।
दुर्वचनेन कलहः,	तृणैः वैश्वानरः।
नीचसङ्गेन दुश्शीलता,	उपेक्षया रिपुः।
कुटुम्बकलहेन दुःखम्,	दुष्टहृदयेन दुर्गतिः।
अशौचेन दारिद्र्यम्,	अपथ्येन रोगः।
असन्तोषेण तृष्णा,	व्यसनेन विषयः।

॥ अभ्यास प्रश्न ॥

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखिए :

(1) इन्दुदर्शनेन कः वर्धते? **(2016CD,CF)**

(2) श्रीः केन वर्धते? **(2016CC,19AE,AF)**

(3) राज्यं केन वर्धते?

(4) तृणैः कः वर्धते? **(2019AB)**

(5) नीचसङ्गेन का वर्धते? **(2019AD)**

(6) रोगः केन वर्धते? **(2020MC)**

(7) विषयः केन वर्धते?

(8) मैत्री केन वर्धते?

(9) विद्या केन वर्धते? **(2016CA,20MA)**
(10) जलदः केन वर्धते?
(11) रिपुः केन वर्धते?
(12) गुणः केन वर्धते?
(13) कुटुम्बकलहेन कः वर्धते?
(14) दानेन का वर्धते? **(2017AF,AG,19AC)**
(15) सत्येन कः वर्धते?
(16) धर्मः केन वर्धते? **(2016CE)**
(17) तृष्णा केन वर्धते? **(2020MG)**
(18) उपेक्षया किं वर्धते?
(19) तपः केन वर्धते?
(20) औदार्येण कः वर्धते?
(21) न्यायेन कः वर्धते? **(2020MB)**
(22) कीर्तिः केन वर्धते?
(23) सुवचनेन किं वर्धते?
(24) वैश्वानर केन वर्धते?
(25) दुर्वचनेन किं वर्धते?
(26) लोभः केन वर्धते? **(2017AE,20MD)**
(27) पुत्र दर्शनेन किम् भवति?
अथवा पुत्र दर्शनेन कः वर्धते?
(28) मित्र दर्शनेन किं भवति? **(2017AA)**
(29) अपथ्येन किं भवति? **(2017AB)**
(30) लाभेन किं वर्धते?

➨ अनुवादात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों का ससन्दर्भ हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) सुवचनेन मैत्री,.....लाभेन लोभः।
(ख) सुवचनेन मैत्री, ... अभ्यासेन विद्या।
(ग) पुत्रदर्शनेन हर्षः,.....व्यसनेन विषयः।

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) अपवित्रता से दरिद्रता बढ़ती है।
(ख) अभ्यास से निपुणता बढ़ती है।
(ग) सत्य से आत्मशक्ति बढ़ती है।
(घ) उपेक्षा से शत्रुता बढ़ती है।
(ङ) उदारता से अधिकार बढ़ते हैं।

➨ व्याकरणात्मक प्रश्न

(1) निम्न शब्दों में विभक्ति एवं वचन बताइए—
व्यसनेन, क्षमया, उपेक्षया, पूर्ववायुना, दानेन।

(2) विनय, रिपु और रोग के चतुर्थी, पञ्चमी एवं सप्तमी विभक्तियों में रूप लिखिये।

➨ पर्यायवाची शब्द

इन्दु—चन्द्रः, शीतांशुः, मयङ्कः, शशिः, रजनीशः। **शृङ्गार**—रसराजः। **वायुः**—अनिलः, पवनः, मरुत्। **वैश्वानरः**—अग्निः, अनलः, पावकः, कृशानुः।

शब्दार्थ

सुवचनेन = सुन्दर वचनों से। **मैत्री** = मित्रता (भाववाचक संज्ञा)। **इन्दु** = चन्द्रमा। **उद्यम** = पुरुषार्थ। **औचित्येन** = उचित की भाववाचक संज्ञा 'औचित्य' उसके द्वारा। **औदार्येण** = उदारता द्वारा। **क्षमया** = क्षमा से। **आह्लाद** = प्रसन्नता। **वैश्वानरः** = अग्नि। **अशौचेन** = अपवित्रता से। **रागः** = प्रेम। **सुवचनेन** = सुन्दर वचनों से। **शृङ्गारेण** = शृंगार से। **दानेन** = दान से। **सदाचारेण** = सदाचार से। **दुर्वचनेन** = कटु वचन से। **जलदः** = बादल। **अपथ्येन** = गलत भोजन करने से। **वर्धते** = बढ़ता है। **श्री** = लक्ष्मी। **उद्यमेन** = परिश्रम से। **पूर्ववायुना** = पुरवैया। **तृष्णा** = कामना, प्यास।

●●